3. Structural Disequilibrium

किसी देश के भुगतान शेष में संरचनात्मक असन्तुलन की स्थिति उस समय आती है जब निर्यात अथवा आयात या इन दोनों की मांग या पूर्ति के ढाँचे में परिवर्तन होता है। किंडलबर्जर के अनुसार "जब देश की आधारभूत परिस्थितियों में परिवर्तन के फलस्वरूप देश की आय का कुछ भाग या तो विदेशों में व्यय किया जाने लगता है अथवा विदेशों से आय प्राप्त होने लगती है तो भी भुगतान-शेष में असन्तुलन की स्थिति पैदा हो जाती है।" इसे एक उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है। माना विदेशों में भारतीय शक्कर की स्थानापन्न वस्तु की खोज के कारण भारत की शक्कर की मांग घट जाती है तो इस स्थिति में शक्कर उद्योग में लगे साधनों को अन्य निर्यात उद्योगों में हस्तान्तरित करना पड़ेगा और यदि किन्हीं कारणों से इन साधनों को अन्य निर्यात उद्योगों में हस्तान्तरित नहीं किया जा सकता तो भारत में कुल निर्यात में कमी हो जाएगी एवं आयात अपरिवर्तित रहने पर, भारत के भुगतान-शेष में असन्तुलन की स्थिति आ जाएगी। यह संरचनात्मक असन्तुलन का एक उदाहरण है।

यदि विदेशी शक्कर की मांग कम

न हो, किन्तु यदि भारत में गन्ने की फसल खराब हो जाने के कारण भारत अपने निर्यातों की पूर्ति नहीं कर पाता और यदि आयात अपरिवर्तित रहता है तो निर्यात कम हो जाने के कारण भारत के भुगतान-शेष में असन्तुलन की स्थिति पैदा हो जाएगी।

भुगतान-शेष में संरचनात्मक असन्तुलन निम्न कारणों से भी उत्पन्न होते हैं- जैसे पूँजीगत हानियाँ, माँग का स्वरूप व्यापार शर्तें, दीर्घकालीन पूँजी प्रवाह में परिवर्तन, संस्थागत परिवर्तन, व्यापार का ढाँचा आदि।

भुगतान शेष में असन्तुलन के अन्य प्रकार

1 Temporary Disequilibrium

भुगतान शेष में अस्थायी असन्तुलन उस समय होता है जब वह अल्पकालीन अथवा अस्थायी कारणों से पैदा होता है तथा ऐसे असन्तुलन की स्थिति दीर्घकालीन नहीं होती। जैसे ही अल्पकालीन कारण समाप्त होते हैं असन्तुलन भी समाप्त हो जाता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी देश में प्रतिकूल मौसम जैसे बाढ़ अथवा सूखे की स्थिति के कारण खाद्यान्न की कमी हो जाती है तो उसे भारी मात्रा में विदेशों से आयात करना

पड़ता है। यदि निर्यातों के मूल्य में कोई परिवर्तन न हो तो अर्थ सम्बन्ध के लिए जब तक कि अगले वर्ष प्रचुर मात्रा में फसल प्राप्त नहीं हो जाती, उस देश का भुगतान शेष असन्तुलित हो जाता है। इसे अस्थायी असन्तुलन कहते है।

2. Permanent Disequilibrium

यह कुछ-कुछ दीर्घकालीन असन्तुलन से मिलता-जुलता है। दीर्घकालीन असन्तुलन उस समय होता है जब आर्थिक विकास की अवस्थाओं में परिवर्तन होता है, किन्तु इस कारण के अतिरिक्त यदि अन्य किन्ही कारणों से किसी देश के भुगतान शेष का असन्तुलन दीर्घकाल तक चलता है तो उसे स्थायी असन्तुलन कहते है। जैसे यदि देश के उत्पादन लागत में वृद्धि होती है जिससे कीमतें बढ़ती है और उन्हें किसी तरह से कम नहीं किया जाता तो इसका देश के निर्यात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जिससे भुगतान शेष में स्थायी असन्तुलन होने की प्रवृत्ति रहती है।

Dr Sandhya Rai
Dept of Economics